कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी.ए. स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा
पार्ट II

महादेवी की वेदना का स्वरूप।

(1) महादेवी ने अपने गीतों में भावना के संवेदनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण तथा उनके सुख-दुःखमय विशेषता संस्पर्शी का चित्रण किया है वेदना का यह स्पर्श महादेवी के भावना जगत में अधिक गहरी तीव्र मर्मस्पर्शी होकर मिलती है। महादेवी का मानना है कि सुख तो क्षणिक है वेदना ही चिर स्थायी है। महादेवी के गीतों में इस वेदना के पीछे एक प्रमुख कारण यह है कि वह नारी है और उन्हें अपनी नारी मर्यादाओं को न लांघ सकने की अपनी अभिव्यक्ति को इतनी नैतिक शुद्धता एवं आत्मिक दीप्ति है इसके साथ ही उनकी वाणी में सूक्ष्म बौद्धिकता से मिश्रित तरल करुण और समर्पण की भावना है।

उन्होंने अपने काव्य में वेदना की अभिव्यक्ति के प्रदर्शन के प्रवर्तन हेतु विभिन्न पद्धतियां अपनायी है यही कारण है कि उनका पूरा काव्य वेदनामय होने के बावजूद भी एकरस और नीरस नहीं प्रतीत होता। उनकी वेदना मन के छिपे भाव रहस्य न होकर मिलन की संदेशिका निर्मित है चित्रण शैली, प्रश्न शैली, अलंकार शैली प्रतीक शैली आदि।

महादेवी वेदना नकारात्मक रूप में प्रस्तुत नहीं करती बल्कि करुणा के सकारात्मक

Scanned with CamScanner

(2) रूप की व्यंजना करती है। उसमें जीवन का उल्लास एवं उत्साह है —

पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की पीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूंढा तुम में ढूंढूंगी पीड़ा ।।